नईदुनिया

संपादकीय

दुबई में आपदा को आमंत्रण

अरब अमीरात और खाड़ी के कुछ अन्य देशों में अचानक आई भारी व असामान्य बारिश ने इंसान को तमाम सबक दिए हैं। जिन देशों को अपनी समृद्धि व संपन्नता का दंभ था, वहां आई मूसलाधार बारिश ने सारी आधुनिक व्यवस्थाएं ध्वस्त कर दी। दुनिया का सबसे ज्यादा आधुनिक व चहल-पहल वाला दुबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट अराजकता का शिकार हो गया। सैकड़ों उड़ाने रद्द हो गईं। दुनिया के चोटी के हवाई अड्डों में शामिल जिस दुबई एयरपोर्ट में पिछले साल आठ करोड़ यात्रियों की आमद थी, एक मूसलाधार बारिश से उसकी सारी व्यवस्थाएं चौपट हो चुकी थीं। इस दौरान ओमान में 19 लोगों की मौत के अलावा अन्य देशों में भी लोगों के हताहत होने की आशंका है। बताते हैं कि अभी भी कई निचले इलाकों में बारिश का पानी भरा हुआ है। संयुक्त अरब अमीरात में पिछले 75 साल बाद रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है। बाढ़ग्रस्त इलाकों में डूबे वाहन और बारह लेन वाले हाईवे पर लगा जाम बता रहा है कि कुदरत की माया के आगे मानव का विकास अभी भी बौना ही है। फिर मध्यपूर्व के रेगिस्तानी इलाकों में मूसलाधार बारिश का होना निश्चित ही अचरज की बात है। अचानक आई इस बारिश और बाढ़ को जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव कहा जा रहा है। लेकिन वहीं लोग आरोप लगा रहे हैं कि यह घटना विशुद्ध रूप से प्रकृति से मानवीय छेड़छाड़ का नतीजा है। आलोचक इस असामान्य बारिश को क्लाउड सीडिंग का नतीजा बता रहे हैं। दरअसल, कृत्रिम तरीके से बारिश कराने की कोशिश को ही क्लाउड सीडिंग कहा जाता है, जिसमें बादल में बारिश के बीज बोने के लिये कृत्रिम तरीके से प्रयास किये जाते हैं। ऐसे कुछ प्रयास यूएई में किये जा रहे थे। एक अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट में बताया गया है कि रविवार व सोमवार को यूएई में क्लाउड सीडिंग की योजना बनायी गई थी और मंगलवार को भयावह बाढ़ के हालात पैदा हुए हैं। आशंका जतायी जा रही है कि क्या कृत्रिम बारिश के प्रयासों के चलते यह स्थिति पैदा हुई है?

बहरहाल, आने वाले वक्त के अध्ययन हमें बताएंगे कि इस आपदा के आने में क्लाउड सीडिंग की कितनी भूमिका थी। वैसे दुनिया के तमाम देशों में संकट के समय क्लाउड सीडिंग कराने के मामले सामने आते रहते हैं। किन्हीं देशों में सामरिक तो कहीं कृषि उद्देश्यों के लिये कृत्रिम बारिश का सहारा लिया जाता है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के चलते बदले हालात में यह संकट गहरा हो जाता है। उल्लेखनीय है कि कृत्रिम बारिश का सहारा तब लिया जाता है, जब हवा की नमी की कमी के चलते बारिश नहीं हो पाती। भारत में साठ के दशक में कृत्रिम बारिश का प्रयोग किया गया था। दरअसल, बारिश के बीजों के रूप में सिल्वर आयोडाइड, पोटेशियम क्लोराइड व सोडियम क्लोराइड जैसे पदार्थों का उपयोग किया जाता है, जिनका हवाई जहाज की मदद से बादलों में छिड़काव किया जाता है। इससे बर्फ के कण बादलों की नमी के साथ मिलकर बारिश होने की प्रक्रिया को अंजाम देते हैं। दरअसल, आधुनिक विकास के मोह में संयुक्त राज्य अमीरात अपने व्यापारिक उद्देश्यों व नागरिकों के लिये पानी की कमी को पूरा करने के लिये इस तकनीक का उपयोग करता रहा है। ऐसे ही भारत में नब्बे के दशक में तमिलनाडु में भयंकर सूखे से निपटने के लिये क्लाउड सीडिंग तकनीक का उपयोग कई बार किया गया था। वहीं चीन ने भी बीजिंग में आयोजित ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों के दौरान पर्यावरण प्रदूषण दूर करने के लिये क्लाउड सीडिंग तकनीक का इस्तेमाल किया था। बहरहाल, यूएई, ओमान व सऊदी अरब जैसे इलाकों में ऐसी भारी बारिश हमारे नीति-नियंताओं को विकास योजनाओं को लेकर नये सिरे से विचार करने को मजबूर कर रही है। इन देशों को अपनी सड़कों व अन्य विकास कार्यों को अब बारिश के ऐसे संकट को नजर में रखकर तैयार करना होगा। साथ ही मनुष्य को इस तथ्य को गंभीरता से स्वीकारना होगा कि प्रकृति के साथ अन्याय करने पर हमें उसका प्रतिकार सहने के लिये तैयार रहना होगा।

आखिर क्यों धधक रही है पृथ्वी

विश्व पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल) पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। हालांकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विगत वर्षों में दुनियाभर में दोहा, कोपेनहेगन, कानकुन इत्यादि बड़े-बड़े अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन होते रहे हैं किन्तु इस दिशा में अभी तक ठोस कदम उठते नहीं देखे गए हैं। दरअसल वास्तविकता यही है कि राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रकृति के बिगड़ते मिजाज को लेकर चर्चाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चर्चाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं।

प्रकृति पिछले कुछ वर्षों से बार-बार भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत दे रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहां किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि बड़ी बढ़ोतरी देखी गई। मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है।

हालांकि प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें चेतावनी भी देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। हम यह समझना ही नहीं चाहते कि पहाड़ों का सीना चीरकर हरे-भरे जंगलों को तबाह कर हम जो कंक्रीट के जंगल विकसित कर रहे हैं, वह वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास के नाम पर हम अपने विनाश का ही मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पहाड़ों में बढ़ती गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता है, जहां का पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है।

धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढ़ेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक दर्ज की जा सकती है और इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहां जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे।

सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पेट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है।

एक और अहम कारण है बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि। जहां 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर 8 अरब से भी ज्यादा हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, इससे पर्यावरण की सेहत पर जो जबरदस्त प्रहार हुआ है, उसी का परिणाम है कि धरती बुरी तरह धधक रही है। ब्रिटेन के प्रख्यात भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग की इस टिप्पणी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि यदि मानव जाति की जनसंख्या इसी कदर बढ़ती रही और ऊर्जा की खपत दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार होती रही तो करीब 600 वर्षों बाद पृथ्वी आग का गोला बनकर रह जाएगी। धरती का तापमान बढ़ते जाने का ही दुष्परिणाम है कि ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के जलमग्न होने की आशंका जताई जाने लगी है।

जब मॉडल बनते- बनते रह गए सत्यजित राय

अजय कुमार शर्मा

भारत की आधुनिक सांस्कृतिक पहचान के दो विश्वव्यापी चेहरे रहे हैं- एक रवींद्रनाथ टैगोर और दूसरे सत्यजित राय। विश्व-प्रसिद्ध फ़िल्म-निर्देशक होने और देश विदेश के अनेकों प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने के बावजूद सत्यजित राय की आर्थिक स्थिति साधारण ही थी। अपने पूरे जीवन में उनके पास कभी इतना पैसा नहीं रहा कि वे अपना खुद का घर भी ख़रीद सकें। सार्वजनिक जीवन में वे अत्यंत ईमानदारी से आचरण करते थे। प्रारंभ की कुछ फ़िल्मों को छोड़ कर बाद की अपनी सभी फ़िल्मों में वे खुद ही संगीत भी देते थे, मगर वे निर्माता से केवल निर्देशन के लिए तय पैसा ही लेते थे।

एक बार उनके जीवन में कुछ अतिरिक्त पैसा कमाने का अवसर आया। दरअसल एक विज्ञापन कंपनी ने उन्हें और उनकी पत्नी को एक मशहूर चाय के विज्ञापन के लिए मॉडल के रूप में लेने की योजना बनाई। इस योजना का हश्र आखिर क्या हुआ इसके बारे में रोचक जानकारी सत्यजित राय पर विजय पाडलकर द्वारा लिखी मराठी पुस्तक के हिंदी अनुवाद- सत्यजित राय सिनेमा और जीवन में मिलती है जिसे संवाद प्रकाशन ने हाल ही में प्रकाशित किया है। जनवरी 1988 में क्लेरियन विज्ञापन एजेंसी के कुछ लोग सत्यजित राय के घर यह प्रस्ताव लेकर पहुंचे थे। तब सत्यजित राय कुछ काम में व्यस्त थे तो उनकी पत्नी विजया ने उनसे बातचीत की। उनके पुत्र संदीप भी तब वहां मौजूद थे। सत्यजित राय की उम्र तब 67 साल की थी। काम कुछ ज्यादा नहीं था। दोनों पति-पत्नी को बस हाथों में चाय का कप लेकर बैठना था और एक दो वाक्य बोलना था। कंपनी छोटे से विज्ञापन के लिए भारी रॉयल्टी देने को तैयार थी। विजया जी को लगता था कि इस विज्ञापन का काम उन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए। इसका एक और कारण भी था। पिछले करीब पांच सालों में सत्यजित राय ने एक भी फ़िल्म निर्देशित नहीं की थी। इसके चलते आय एकदम घट गई थी। ऐसे में ही 1983 में उन्हें दिल का ज़बर्दस्त दौरा पड़ा था। उनकी दवाइयों का ख़र्च बहुत बढ़ गया था। चूंकि राय एक लोकप्रिय लेखक भी थे, इसलिए उनकी पुस्तकों और अनुवाद की रॉयल्टी से घर चलाने जितनी राशि मिल जाती थी। अंतत: विजया जी ने क्लेरियन के अधिकारियों को हामी भर दी। जब यह बात संदीप को पता चली तो वह थोड़ा नाराज़ हो गया। चकित होती हुई विजया जी बोलीं, इसमें क्या समस्या है? जब वे लोग आए थे, तब तो तुम वहीं पर थे। तब तुमने कुछ क्यों नहीं कहा?

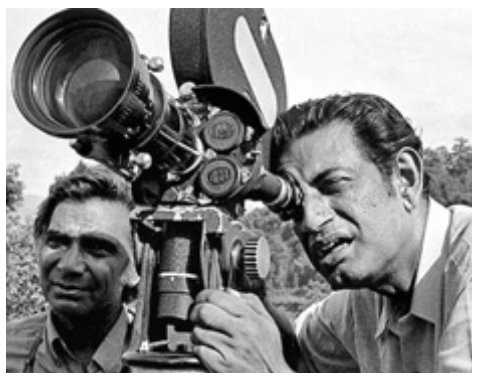

देखो माँ, क्या पिताजी के स्तर के व्यक्ति का पैसों के लिए विज्ञापन में काम करना ठीक लगेगा? क्या तुमने यह सोचा है कि उन्हें इस बात का कितना बुरा लगेगा? इस पर विजया जी का जवाब था कि मैंने ऐसा विचार किया ही नहीं। मैं केवल विज्ञापन से मिलने वाले पैसों के बारे में ही सोच रही हूं । एक छोटे-से विज्ञापन के लिए वे लोग लाखों रुपया देने को तैयार हैं। मेरे कुछ ज़रूरी और रुके हुए कार्य इससे पूरे हो जाएंगे। तुम इस बारे में अपने पिता से कोई बात मत करना। बड़ी मिन्नत से मैंने उन्हें तैयार किया है। विज्ञापन एजेंसी के अधिकारियों को यह विज्ञापन कलकत्ता में शूट नहीं करना था। उन्होंने इसे राय बाबू की पसंदीदा जगह करने का निर्णय लिया था। सत्यजित राय ने उन्हें काठमांडू का सुझाव दिया। एजेंसी वाले इसके लिए तैयार हो गए। संदीप उस वक़्त किशोर कुमार पर एक डॉक्यूमेंट्री बना रहे थे और उन्हें मुंबई जाना था। इसके चलते सत्यजित, विजया जी और फ़ोटोग्रॉफ़र निमाई घोष तीनों काठमांडू चले गए। विजया जी समझ गईं कि संदीप नाराज़ है इसलिए बहाना कर मुंबई चला गया है। उनके मन में पहली बार यह संदेह उपजा कि वे जो कर रही हैं, वह ठीक है अथवा ग़लत।

काठमांडू में होटल ओबेरॉय में रॉय के रहने की व्यवस्था की गई थी। सुबह एजेंसी के लोग आए और उन्होंने हाथ में चाय के कप पकड़े इस जोड़े के अनेक फोटो निकाले। दूसरे दिन संदीप भी मुंबई से सीधे काठमांडू पहुंच गया। जब विजया जी ने उसे बताया कि विज्ञापन शूट हो चुका है, तो उसका चेहरा उतर गया। सत्यजित राय वहीं बैठे हुए थे। तब तक उन्हें भी अंदाजा हो गया था कि संदीप नाराज है। अचानक वे बोले, यदि संदीप को उचित नहीं लगता होगा तो हम अभी भी उन्हें मना कर सकते हैं। विजया जी हक्का-बक्का रह गईं। इतना कुछ होने के बाद अब उन्हें कैसे मना किया जा सकेगा? उसमें क्या हुआ? अब मुझे लगता है कि इस विज्ञापन को स्वीकार कर मैंने गलती की है। मैंने पैसों को कभी भी बहुत महत्त्व नहीं दिया है। उनसे कह दो, मुझे यह स्वीकार नहीं है। उनसे यह भी कह दो कि काठमांडू आने-जाने और रहने का हमारा खर्च हम ही करेंगे।

राय ने सब-कुछ इतना साफ़-साफ़ कहा था कि विजया जी चुप ही रह गईं। उनके स्वास्थ्य को देखते हुए उन्हें ज़्यादा मानसिक कष्ट देना उचित नहीं था। विजया जी ने चुपचाप उस कंपनी को राय के इस निर्णय से अवगत करा दिया। अब आश्चर्यचकित होने की बारी कंपनी के लोगों की थी। उन्होंने विजया जी को समझाते हुए कहा कि यदि राय बाबू को पैसों को लेकर कोई समस्या है तो कंपनी यह घोषित कर देगी कि राय बाबू ने इस विज्ञापन के लिए किसी भी तरह की रॉयल्टी नहीं ली है। लेकिन इस प्रस्ताव को भी सत्यजित अथवा विजया जी ने स्वीकार नहीं किया। आगे इस मुद्दे पर घर में कभी चर्चा नहीं हुई।

चलते चलते-सत्यजित राय की फिल्म अशानी संकेत का चयन बर्लिन के फ़िल्म महोत्सव के लिए हुआ था। समिति ने पांच लोगों को वहां आने का खर्चा उठाने की स्वीकृति दी लेकिन ईमानदार राय अपनी पत्नी को अपने खर्चे पर वहां ले गए। बर्लिन महोत्सव में अशानी संकेत को बेस्ट पिक्चर का अवार्ड मिला। आमतौर पर बेस्ट पिक्चर अवार्ड फिल्म के निर्माता को दिया जाता है, मगर महोत्सव की समिति ने राय से आग्रह किया कि यह पुरस्कार राय खुद स्वीकार करें। राय इसके लिए तैयार नहीं थे मगर महोत्सव की समिति ने इस तरह की घोषणा पहले कर दी थी अंतत: राय को ही यह पुरस्कार स्वीकार करना पड़ा। उनके निर्माता श्री भट्टाचार्य को यह बात अच्छी नहीं लगी। कुछ दिनों बाद वे सत्यजीत राय के घर पहुंचे और बोले, मेरी मां को हमारी फिल्म को मिले अवार्ड को देखने की बहुत इच्छा है।

आजकल

आतंक फैलाने की कोशिश

पिछले कुछ समय से जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों की बढ़ती सख्ती के बीच आतंकियों पर शिकंजा कसा है। इसकी वजह से आतंकवादियों के बीच हताशा की स्थिति साफ देखी जा सकती है। शायद यही वजह है कि अब आतंकियों ने पहचान तय करके किसी साधारण व्यक्ति को मार डालने की नई रणनीति पर काम करना शुरू कर दिया है, ताकि सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया जा सके।

मगर उनकी ऐसी बर्बरता और अपनी मंशा को पूरा करने के लिए मानवीयता के खिलाफ हर हद को पार करने की हरकतों से उनकी हकीकत का पता चलता है। वरना क्या कारण है कि वहां अन्य राज्य से आकर कोई छोटा-मोटा काम करके गुजारा करने वाले गरीब लोगों या मजदूरों को भी मार डालने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती। हालांकि आतंकवाद की जिस दृष्टि के साथ वे काम करते हैं, उसमें उनकी इस तरह की अमानवीय हरकतों पर हैरानी नहीं होती। गौरतलब है कि जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में आतंकवादियों ने एक बार फिर लक्षित हत्या की घटना को अंजाम दिया। बुधवार को बिजबेहरा इलाके के जबलीपोरा में आतंकियों ने एक मजदूर को नजदीक से गोली मार दी। मारा गया व्यक्ति बिहार से वहां जाकर मजदूरी और अन्य काम करता था। केवल इस वर्ष निशाना बना कर किसी व्यक्ति को मार डालने की यह तीसरी घटना है। पिछले कुछ समय से सुरक्षा बलों की बढ़ती सख्ती के बीच हताश आतंकियों ने अब राज्य के बाहर से आकर गुजारा करने वाले लोगों की हत्या करना शुरू कर दिया है। इससे पता चलता है कि उनका मकसद राजनीतिक नहीं है, बल्कि हिंसा और निर्दोष या मासूम लोगों की हत्या के जरिए आतंक फैलाना ही उनकी राजनीति है। दरअसल, यह वारदात जिस अनंतनाग लोकसभा क्षेत्र में हुई, वहां सात मई को तीसरे चरण के तहत मतदान होना है और उम्मीद की जा रही है कि वहां लोग अपने मताधिकार का खुल कर प्रयोग करेंगे। जाहिर है, बिहार से जम्मू-कश्मीर जाकर मजदूरी करने वाले व्यक्ति की हत्या दरअसल स्थानीय लोगों के बीच भी दहशत फैलाने की कोशिश है, ताकि लोगों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में हिस्सा लेने से रोका जा सके। समस्या यह है कि आए दिन सरकार आतंकवाद का सामना करने और उसका खात्मा करने के लिए हर स्तर पर सख्ती बरतने और आतंकियों का असर कम होने का दावा करती है।

दवा नियामकों के कामकाज की समीक्षा जरूरी...

दिनेश सी. शर्मा

पतंजलि आयुर्वेद के विज्ञापनों की तार्किकता को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में जारी कानूनी लड़ाई ने अनेकानेक कारणों से काफी जिज्ञासा जगाई है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पतंजलि के कर्ता-धर्ताओं बाबा रामदेव और बालकृष्ण को अदालत की अवमानना के लिए निजी तौर पर पेश होकर बार-बार माफी मांगने पर जोर देना अभूतपूर्व है। इस मामले में अंतिम फैसला अभी आना बाकी है लेकिन अब तक हुई सुनवाई से तमाम संबंधित पक्ष यानी दवा निर्माता, नियामक, सरकार और सबसे ऊपर, उपभोक्ता के लिए कई अहम सबक सीखने को हैं।

इस मामले के केंद्र में है दवा एवं जादुई उपचार (एतराज योग्य विज्ञापन) कानून 1954, दवा एवं प्रसाधन कानून-1940 और तत्पश्चात 1945 में बनाए नियम। 1954 में बना कानून कुछ दवाओं के विज्ञापन पर रोक लगाता है और कुछ स्थितियों में दवाओं का प्रचार कैसे किया जाए, इसको नियंत्रित करता है। जिन रोगों के इलाज को लेकर विज्ञापन देने पर रोक है उनमें कैंसर, मधुमेह, बच्चा न होना, एड्स, मोटापा, समय पूर्व बुढ़ापा, अंधता इत्यादि हैं। यह कानून विशेष तौर पर उन भ्रामक विज्ञापनों के लिए है जिनमें रोग को ठीक करने हेतु चमत्कारी इलाज या किसी दवा की प्रभावशीलता को लेकर झूठे अथवा बढ़ा-चढ़ाकर किए दावे हों। यह कानून केंद्र सरकार को इन प्रावधानों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने की शक्ति प्रदान करता है। भारत में दवाएं, प्रसाधन, मेडिकल उपकरण और अन्य संबंधित उत्पादों का उत्पादन, वितरण और बिक्री के लिए 1940 का कानून और इसके अंतर्गत बनाए गए नियम, मुख्य प्रावधान हैं।

पतंजलि का अपने अनेकानेक जड़ी-बूटी आधारित उत्पादों के बारे में दावा है कि इनसे रोग पूरी तरह 'ठीक' हो जाते हैं, इनमें डायबिटीज़, थायरॉयड समस्या और यहां तक कि कैंसर भी शामिल है। कोविड-19 महामारी के दौरान, इसने कोरोनिल नामक उत्पाद जारी किया और कोविड 'ठीक' करने का दावा किया। इस उत्पाद की लॉन्चिंग में तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन भी उपस्थित थे। जब इसकी प्रभावशीलता को लेकर सवाल उठे तो मार्किटिंग पैंतरे के तहत दावे को 'उपचार' से 'प्रबंधन' बताना शुरू कर दिया। अनेकानेक रोगों को ठीक करने का दावा करते अपने विज्ञापनों में पतंजलि संस्थान इलाज की आधुनिक मेडिकल व्यवस्था को निशाना बनाने लगा। यह कहकर कि उसके पास ठीक करने वाला कोई इलाज नहीं है। इसने न केवल स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को असहज किया बल्कि भारतीय मेडिकल संगठन (आईएमए) को भी। इन्होंने पतंजलि आयुर्वेद को दो दवा कानूनों के उल्लंघन करने के लिए अदालत में घसीटा, जहां पर पतंजलि को चेतावनी मिली। तथापि, अदालत की सरासर अवमानना करते हुए, इस संस्थान ने अपने भ्रामक विज्ञापन जारी रखे। दवाओं, उपायों और स्वास्थ्य से संबंधित भ्रामक विज्ञापन एक बड़ी समस्या है और इस काम में पतंजलि आयुर्वेद ही एकमात्र नहीं है। भारत भर में अखबार और टेलीविज़न चैनल (एक विशेष वक्त पर) पर ऐसे विज्ञापनों और प्रायोजित सामग्री की भरमार है, जिनमें हरेक रोग के इलाज और उपचार को लेकर बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं, फिर चाहे यह कब्ज हो या हृदय रोग। ऑनलाइन मंच जैसे कि यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक पर ऐसे चिकित्सकों, कंपनियों की बाढ़ आई हुई है और यह करना कानून का पूरी तरह उल्लंघन है। तथाकथित सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स भी संभावित खतरनाक स्वास्थ्य उत्पादों के प्रचार में शामिल हो गए हैं। हालांकि, बड़ी दवा कंपनियां भी सीधे ढंग से विज्ञापन देने से बचती हैं लेकिन उन्होंने भी चोर रास्ते निकाल रखे हैं, जिसमें पैसे देकर बनवाई-चलवाई खबरें, मेडिकल सम्मेलनों को प्रायोजित करना और चिकित्सकों को अपनी दवाएं लिखने की एवज में उपहार देना इत्यादि शामिल है। कुछ साल पहले, स्वयं भारतीय मेडिकल संघ पर कुछ उत्पादों की प्रभावशीलता और नैतिकता संबंधी पक्ष पर ध्यान दिए बिना उनका अनुमोदन करने का इल्जाम लगा था।

हम लोग इस स्थिति में इसलिए नहीं हैं कि हमारे कानून नाकाफी या नख-दंतहीन हैं। बल्कि इसलिए हैं क्योंकि सरकार द्वारा इनकी अनुपालना करवाने में ढीलढाल की जाती है। नियामक एवं नियंत्रण करने वाले संस्थानों ने मुंह फेरना तय कर रखा है। कानून भी पुराने पड़ चुके हैं और इनमें समय-समय पर सुधार नहीं किया गया। इनकी प्रासंगिकता को लेकर बनी अनेक कमेटियों ने इन्हें और अधिक कड़ा बनाने की जरूरत बताई है। बेशक बदलाव की प्रक्रिया में समय लगता है किंतु वर्तमान प्रावधानों का सर्वश्रेष्ठ उपयोग न करने के पीछे क्या वजह है। लेखक ने वर्ष 2008 में रामदेव द्वारा एचआईवी-एड्स को लेकर किए दावों पर सवाल उठाए थे।

अम्बुमणि रामदॉस जो कि स्वयं प्रशिक्षित चिकित्सक हैं और तत्कालीन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री थे, ने रामदेव को इस बाबत मंत्रालय से नोटिस भी जारी करवाया था। लेकिन जल्द ही उन्होंने भी यू-टर्न लिया और गुरुग्राम में रामदेव द्वारा आयोजित योग शिविर में भाग लिया, वहां रामदेव ने फिर से एचआईवी-एड्स को ठीक करने के अपने दावे दोहराए। बृंदा करात, जो उस वक्त मार्क्सवादी पार्टी से सांसद थीं, उन्होंने भी उत्तराखंड सरकार से भ्रामक विज्ञापनों का मसला उठाया था, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

मौजूदा मामले में, केंद्र और राज्य सरकार नियामक एजेंसियों ने अपनी कार्रवाई में ढिलाई बरती है और आपसी मिलीभगत से पतंजलि को अतिरंजित विज्ञापन देने की खुली छूट दिए रखी।